

चिन्तन का अर्थ व परिभाषा

(MEANING & DEFINITION OF THINKING)

मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा गया है। इसका कारण है— उसका चिन्तनशील होना। जीवधारि में मनुष्य ही सर्वाधिक चिन्तनशील है और यही चिन्तन मनुष्य और उसके समाज के विकास का कारण है। शिवा के द्वारा मनुष्य की चिन्तन शक्तियों को विकसित किया जाता है।

मनुष्य के सामने कभी-कभी किसी समस्या का उपस्थित होना स्वाभाविक है। ऐसी दशा में वह उस समस्या का समाधान करने के उपाय सोचने लगता है। वह इस बात पर विचार करना आरम्भ कर देता है कि समस्या को किस प्रकार सुलझाया जा सकता है। उसके इस प्रकार सोचने या विचार करने की क्रिया को 'चिन्तन' कहते हैं। दूसरे शब्दों में, "चिन्तन विचार करने की वह मानसिक प्रक्रिया है, जो किसी समस्या के कारण आरम्भ होती है और उसके अन्त तक चलती रहती है।

हम चिन्तन के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएँ दे रहे हैं; यथा—

1. रॉस—"चिन्तन, मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है या मन की बातों से सम्बन्धित मानसिक क्रिया है।"

"Thinking is mental activity in the cognitive aspect, or mental activity with regard to psychical objects."

—Ross (pp. 196-197)

2. वेलेन्टाइन—"चिन्तन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए किया जाता है, जिसमें शृंखलाबद्ध विचार किसी लक्ष्य या उद्देश्य की ओर अविराम गति से प्रभावित होते हैं।"

"It is well to keep the term 'thinking' for an activity which consists essentially of a connected flow of ideas which are directed towards some end or purpose."

—Valentine (p. 287)

3. रेबर्न—"चिन्तन, इच्छा-सम्बन्धी प्रक्रिया है, जो किसी असन्तोष के कारण आरम्भ होती है और प्रयास एवं त्रुटि के आधार पर चलती हुई उस अन्तिम स्थिति पर पहुँच जाती है, जो इच्छा को संतुष्ट करती है।"

"Thinking is a conative process, arising from a felt dissatisfaction and proceeding by trial or error to an end-state which satisfies the conation."

—Reyburn (p. 250)

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि चिन्तन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पथ है। यह प्रक्रिया किसी विशेष उद्देश्य की ओर परिलक्षित होती है। इसमें इच्छा तथा असन्तोष का महत्व है। इच्छा तथा असन्तोष मनुष्य को चिन्तन करने के लिए विवश करते हैं।

चिन्तन की विशेषताएँ

(CHARACTERISTICS OF THINKING)

सी. टी. मार्गन के शब्दों में—"वास्तव में प्रतिदिन की वार्ता में प्रयोग होने वाले चिन्तन शब्द में विभिन्न क्रियाओं की संरचना निहित है।" इसका सम्बन्ध गम्भीर विचारशील क्रिया से है। इस दृष्टि से चिन्तन की विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. विशिष्ट गुण—चिन्तन, मानव का एक विशिष्ट गुण है, जिसकी सहायता से वह अपनी बर्बर अवस्था से सभ्य अवस्था तक पहुँचने में सफल हुआ है।

2. **मानसिक प्रक्रिया**—चिन्तन, मानव की किसी इच्छा, असंतोष, कठिनाई या समस्या के कारण आरम्भ होने वाली एक मानसिक प्रक्रिया है।
3. **भावी आवश्यकता की पूर्ति हेतु व्यवहार**—चिन्तन किसी वर्तमान या भावी आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए एक प्रकार का व्यवहार है। हम अंधेरा होने पर बिजली का स्विच दबाकर प्रकाश कर लेते हैं और मार्ग पर चलते हुए सामने से आने वाली मोटर को देखकर एक ओर हट जाते हैं।
4. **समस्या समाधान**—मर्सेल (Mursell, p. 160) के अनुसार, चिन्तन उस समय आरम्भ होता है, जब व्यक्ति के समक्ष कोई समस्या उपस्थित होती है और वह उसका समाधान खोजने का प्रयत्न करता है।
5. **अनेक विकल्प**—चिन्तन की सहायता से व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान करने के लिए अनेक उपायों पर विचार करता है। अन्त में, वह उनमें से एक का प्रयोग करके अपनी समस्या का समाधान करता है।
6. **समस्या समाधान तक चलने वाले प्रक्रिया**—इस प्रकार, चिन्तन एक पूर्ण और जटिल मानसिक प्रक्रिया है, जो समस्या की उपस्थिति के समय से आरम्भ होकर उसके समाधान के अन्त तक चलती रहती है।